RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-04
April -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

ज्ञान समाज तथा पर्यावरण शिक्षा

डॉ रानी सिंह

+2 शिक्षिका एम एल एकेडमी लहेरियासराय दरभंगा बिहार

हमारे चारों ओर के जीव–जन्तु, वनस्पतियाँ जो हमें प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है तथा जिसके साथ हम अंत:किया करते है तथा जिन पर हमारा तथा अन्य जीवों का जीवन निर्भर करता है, पर्यावरण कहलाता है। मानव भौतिक वा प्राकृतिक पर्यावरण से अंत:किया करता है तथा उसके जीवन का प्रत्येक पक्ष पर्यावरण से प्रभावित होता है। हमें वायु, भोजन, जल, की आवश्यकता होती है। प्रकृति ने मनुष्य को कई प्रकार की सौगात दी है जिसमें उसकी सबसे बड़ी सौगात पर्यावरण है। अगर पर्यावरण न हो तो पृथ्वी में जीवन जीना संभव नही होगा। पर्यावरण का हमारे जीवन से गहरा संबंध है।

पर्यावरण शिक्षा का उद्देश्य पर्यावरण का ज्ञान, पर्यावरण के प्रति सकारात्क दृष्टिकोण, पर्यावरण सुधार में सहभागिता, पर्यावरण सूधार का कौशल, पर्यावरण सुधार मूल्यांकन है। प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण की जानकारी देना, पर्यावरण संरक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना, ताकि पर्यावरण प्रदूषण को रोकने वा पर्यावरण सुधार की दिशा में उपयुक्त कदम उठाये जा सकें। शिक्षा के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा कियात्मक तीनों ही पक्षों पर इसका प्रभाव है। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से जन साधारण में चेतना आती है तथा वे अपने पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होगें। पर्यावरण शिक्षा के आधार पर छात्र–छात्राओं को पर्यावरण के विभिन्न उपादानों की जानकारी प्राप्त होती है। उन्हे पर्यावरण संरक्षण के वैज्ञानिक तकनीकों के संबंध में परिज्ञान होता है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनमें एक नई चेतना पैदा होती है। पर्यावरण तथा समाज के संबंध उसके सामाजिक मूल्यों तथा प्रतिमानों के अतिरिक्त उनके ज्ञान की व्यवस्था में भी प्रतिबिंबित होते है। पूँजीवादी मूल्यों ने प्रकृति के उपयोगी वस्तु होनें की विचारधारा को घोषित किया है जहाँ प्रकृति करें एक वस्तु के रूप में परिवर्त्तित कर दिया गया है जिसे लाभ के लिए खरीदा या बेचा जा सकता है। पर्यावरण तथा समाज के संबंधों को कई परिप्रेक्ष्यों में देखा जा सकता है। इन भिन्नताओं के अंतर्गत 'प्रकृति–पोषण' विवाद तथा व्यक्तिगत विशेषताएँ होती है जो पारिवेशिक कारकों से प्रभावित होती है या आती है। पर्यावरण प्रबंधन हालाँकि एक कठिन कार्य है। बढतें औद्योगीकरण के कारण संसाधनों का दोहन बड़े पैमाने पर अत्यंत तीव्र गति से हो रहा है। जिसने परिस्थितिकी तंत्र को कई तरह से प्रभावित किया है। आज हम जोखिम भरे समाज में रहते है जहाँ ऐसी तकनीकों तथा वस्तुओं का हम प्रयोग करते है जिसके बारे में हमे पूरी समझ नही है। आज भू–जल के स्तर में लगातार कमी के कारण पूरे भारत में हाहाकार है। ज्ञान समाज के माध्यम से लोगों को पर्यावरण के बारे में जागरूक किया जाता है, ताकि वे संचालनों का दुरूपयोग न करे। कम्प्यूटर, संचार, और नेटवकिंग, प्रौद्योगिकियों के आगमन से जन साधारण तक ये बातें पहुँची है कि अगर हम पर्यावरण को नुकसान पहुँचायेंगें तो हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा। आज लोग पॉलीथीन का इस्तेमाल कम कर रहे हैं। लोगों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता दिखी है। पर्यावरण शिक्षा तथा ज्ञान समाज के बीच स्पष्ट संबंध मौजूद है। व्यक्ति और समाज में हो रहे परिवर्त्तनों का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा है। ए0 पी0 जे अब्दुल कलाम के अनुसार सूरज बननें के लिए सूरज की तरह तपना होता है। सूरज की तरह विश्व का प्यारा भी होना पड़ता है। संचार क्रांति ने दुनिया के दरवाजे को खोल दिया है। अब पलक झपकते ही हमें इन्टरनेट के माध्यम से संपूर्ण दुनिया की जानकारी मिल जाती है। ज्ञान समाज वह समाज है जिसमें सूचना और ज्ञान का निर्माण, प्रसार और उपयोग उत्पादन का सबसे महत्वपूर्ण कारक है।

सामान्य तौर पर यह शब्द उन समाजों का वर्णन करता है जो आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान बनाने की अपनी क्षमता पर काफी हद तक निर्भर करते है। इसका उद्देश्य नवाचारों के विकास में ज्ञान का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग करने में सक्षम होने के लिए मानव पूंजी के संसाधनों को संचित करना है। पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण सुरक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करनें का साधन है। विद्यालयों में छात्र–छात्राएँ पर्यावरण के बारे में जानकारी कर अपने कौशल से उसकी समस्याओं को समझनें, हल निकालने और मिटाने अथवा दूर करने की कोशिश करते है। पर्यावरण शिक्षा तथा ज्ञान समाज के बीच स्पष्ट संबंध मौजूद है। वैश्वीकरण एवं आर्थिक उदारीकरण, उपभोक्तावाद, बाजारवाद तथा जनसंख्या की वृद्धि के कारण पर्यावरण प्रभावित हुआ है। प्रदूषण के कारण पर्यावरण का संरक्षण एक चुनौती तथा एक कठिन सवाल बनकर खड़ा है। विशेष रूप से बिहार राज्य के अंतर्गत हाल के वर्षो में जल संकट की स्थिति उत्पन्न हुई है। शुद्ध पेय जल के लिए हाहाकार मचा हुआ है। ध्वनि प्रदूषण की समस्या गंभीर होती जा रही है। लोग विभिन्न क्षेत्रों में वायु प्रदूषण के कारण विभिन्न प्रकार की बीमारियों से जूझ रहे है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

ज्ञान समाज बुनियादी तौर पर सूचना क्रांति के तकनीकों पर आधारित है। ज्ञान समाज के कारण पारदर्शी ज्ञान का प्रबंधन होता है। सीमित समय तथा सीमित साधन में ज्ञान को उपलब्ध किया जा सकता है। यह वैज्ञानिक पद्धति तथा वस्तुनिष्ठ दृष्टि पर आधारित है। अत: पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान समाज की भूमिका महत्वपूर्ण सिद्ध हो रही है। पर्यावरण संरक्षण से संबंधित नये –नये तकनीकों के प्रचार में तथा शिक्षा के क्षेत्र में नये नये तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। डीजिटल इंडिया के तहत शिक्षा को प्राथमिकता दी गई है। उदाहरणस्वरूप जल प्रदूषण की समस्या के समाधान के लिए ज्ञान समाज के जरिये देश विदेश में उपलब्ध नये नये तकनीकों की सूचना इंटरनेट के जरिये प्राप्त की जा सकती है। सूचना एवं संचार तकनीकि शिक्षा का बुनियादी आधार सिद्ध हो रहा है। अत: इन तकनीको के जरिये विद्यालयों में तथा उच्च शिक्षा सहज रूप में दी जा सकती है। ज्ञान समाज के साथ ज्ञान अर्थव्यवस्था का तर्कपूर्ण संबंध है। उल्लेखनीय है कि ज्ञान समाज से संबंधित शिक्षण प्रबंधन के लिए दक्ष कामगारों की आवश्कता होती है। कम्प्यूटर, इंटरनेट तथा अन्य डीजिटल तकनीक में दक्षता के बिना पर्यावरण शिक्षा संभव नही है।

बिहार सरकार के द्वारा सीमांत गाँव में भी मानव श्रृंखला के माध्यम से एक नयी चेतना पैदा की गयी है। इस प्रकार पर्यावरण शिक्षा का लाभ शिक्षित एवं आशिक्षित सभी वर्ग के लोगों को प्राप्त हो रहा है। ज्ञान समाज में डायग्राम, ग्राफ, पोस्तर एनीमेशन तथा अन्य तकनीकों का भी उपयोग होता है। इस प्रकार सभी तबके के लोगों को पर्यावरण शिक्षा के संबंध में चित्रात्मक ज्ञान प्राप्त होता है। फलत: प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं सोशल मीडिया या अन्य संबंधित सूचना तकनीकों के द्वारा शिक्षा दी जा रही है। जल जीवन हरियाली के तहत जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण तथा अन्य अनेक प्रदूषणों के खिलाफ मुहिम चल रहा है। बिहार के कोने कोने में इस आंदोलन के प्रति लोगों में उत्साह एवं जागरूकता उत्पन्न हुआ है। शोध के आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि जल जीवन हरियाली से संबंधित महत्वाकांक्षी योजना की सफलता के लिए ज्ञान समाज की उपयोगिता सर्वाधिक है। ज्ञान से संबंधित आधुनिक तकनीकों का प्रबंधन किया जाना चाहिए।

भारत में वृक्ष पूजा की पंरपरा रही है। वृक्ष वायु का संरक्षण करता है तथा इससे ऑक्सीजन भी प्राप्त होता है। वृक्ष से छाँव भी मिलता है तथा फल भी मिलता हैं। वृक्ष के सूख जाने पर भी उपस्कर आदि में उसका उपयोग होता है। इसप्रकार वृक्ष को उत्पादन के साधन के रूप में पर्यावरण के संरक्षण तथा संतुलन में भी जंगल का विशेष महत्व है। उल्लेखनीय है कि औद्योगीकरण तथा वैश्वीकरण के कारण व्यापक पैमाने पर वृक्षो का विनाश हो रहा है। यह मानव समाज तथा मानव सभ्यता के लिए खतरनाक है। बड़े–बड़े उद्योग धंधो का विकास तथा महानगरों एवं नगरों के लगातार हो रहे विस्तार के कारण भी जंगल पर संकट बढ़ता जा रहा है। वृक्ष के साथ कई पशु प्राणियों का भी जीवन जुड़ा होता है। पर्यावरण में प्रत्येक प्राणी का विशेष महत्त्व होता है। प्राणियों के संरक्षण तथा पालन पोषण के लिए वृक्ष के साथ पर्यावरण संसाधन अपेक्षित है। ज्ञान समाज के जरिये पर्यावरण शिक्षा में इन तमाम मुद्दो को रेखांकित किया जा सकता है। पर्यावरण ऊर्जा का स्रोत होता है। स्वच्छ हवा, स्वच्छ जल तथा स्वच्छ परिवेश में मनुष्य ऊर्जा का अनन्त स्रोत प्राप्त करता है। आधौगीकरण तथा वैश्वीकरण के कारण ही व्यापक पैमानें पर नदी तथा तालाब आदि प्रदूषित हुआ है। गंगा भी मैली हो गई है। शुद्ध पेय जल के अभाव में मनुष्य तरस रहा है। अत: निष्कर्ष के रूप में तीन बिन्दुओं को रेखांकित किया जा सकता है–

1. प्रकृति की तरफ लौटो (Return to nature)
2. गाँव की तरफ लौटो (Return to Village)
3. परिवार की तरफ लौटो (Return to family)

यह शोध–पत्र पर्यावरण शिक्षा पर केन्द्रित है। पर्यावरण शिक्षा को विशेष महत्व दिया जा रहा है। देश–विदेश के विभिन्न शिक्षा संकायों में पर्यावरण शिक्षा को सम्मिलित किया गया है। पर्यावरण शिक्षा का प्रबंधन सूचना तकनीक के आधार पर किया जाता रहा है। भारत में गुरूकुल की परंपरा कायम रही है। गुरूकुल की परंपरा में भी पर्यावरण शिक्षा को विशेष महत्व दिया जाता था। पर्यावरण शिक्षा शिक्षण क्षेत्र में प्रबंधन से जुड़ा हुआ है। यह संगठित शिक्षण पद्धति पर आधारित है। इसके अंतर्गत प्रकृति पर्यावरण के उपागमों तथ उनकी क्रियाशीलता के संबंध में जानकारी दी जाती है। इसका क्षेत्र विस्तृत है। इसका आरंभिक प्रबंध प्राथमिक विद्यालयों में किया जाता है। माध्यमिक विद्यालय, उच्चतर माध्यमिक, तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी पर्यावरण शिक्षा का विस्तार किया जा रहा है।

संदर्भ–सूची

1. के0 मैलोन, 1999, इन्वायरमेन्ट एडुकेशन रिसचर्स एस इन्वायरमेन्टल एक्टिविस्ट, इन्वायरमेन्टल एडुकेशन रिसर्च, पृ0 177
2. डी0डब्ल्यू होलसचेर, 2009 कल्टीवेटिंग द इकोलोजिकल कॉनसाइंस: स्मिथ, और एण्ड बॉवर्स ऑन इकोलॉजिकल एडुकेशन, पृ0 25
3. हमारा पर्यावरण, भारतीय पर्यावरण समिति दिल्ली, पृ0 45

RRIJM 2015, All Rights Reserved

4. मापाजी सिनजेला, 1984, डेवलपिंग कट्रीज पर्सेप्शन्स ऑफ इन्वायनमेंटल प्रोटेक्शन एंड इकॉनामिक डेवलपमेंट, आईजेआईएल वाल्यूम 24, पृ0 489
5. सतत विकास मुददे और चुनौतियाँ, आई. जी. एन. ओ. यू., 2005, पृ0 117
6. वही, पृ0 120
7. एन0एस भंडारी, 2008, पर्यावरण, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, दिल्ली, पृ0 82
8. एस0 पी0 चौबे, भारतीय शिक्षा का इतिहास, अग्रवाल पबिलकेशन, आगरा, पृ0 25

RRIJM 2015, All Rights Reserved